इंदौर
दि. 5 अप्रेल 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

डॉ. भीमराव अम्बेडकर
जी की जयंती पर कोटिशः नमन

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

शीर्षक (टाइटल) पंजीयन MPHIN36490

मासिक जागरण पत्रिका

नव वर्ष की बेला में नव गूँज के साथ प्रकट हो रहा नवीन विमर्श

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

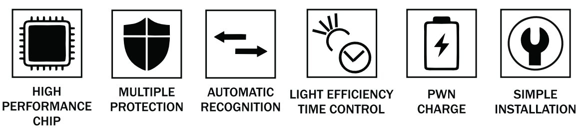

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्ते लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अप्रैल 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 09
...
चैत्र–वैशाख
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
...
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341
...
Email :
jagrutmalwa@gmail.com
jagrutmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

वर्ष प्रतिपदा सृष्टि के निर्माण का दिवस है इस दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था, इस सृष्टि में सभी पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, प्रकृति, जलाशय, चर-अचर जगत, सभी के लिए वर्षप्रतिपदा का दिन नये वर्ष का शुभांरभ दिवस है और हमारी चिर पुरातन, सनातन, हिन्दू, भारतीय संस्कृति भी इसे मनाती आ रही है। इस दिन हमारे नए वर्ष की शुरुआत होती है जिसे हम गुड़ी पड़वा, चेटीचंड दिवस और नवरात्र प्रारंभ, माँ नवरात्रि की घटस्थापना आदि सारे पर्व के रूप में मनाते है। यह विक्रम संवत् और युगाब्ध, रा.शक संवत्, आदि अनेक प्रकार के सम्वत्सर के प्रारंभ का दिवस है, जो हिंदू संस्कृति के प्रकट अंग है।

सदियों पुरानी हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग का हम नित निरंतर पालन करते हुए इस प्रकृति के प्रति अपना आभार भी प्रकट करते हैं नवरात्रि में हर दिन एक त्यौहार रहता है जिसमें मालवा और निमाड़ के संस्कृति में गणगौर तथा दुर्गाष्टमी रामनवमी आदि प्रमुख रहते हैं । इस माह में हनुमान जयंती भी रहती है और निषाद जयंती भी इस प्रकार यह पूरा माह व्रत त्यौहार और पर्व के कारण प्रसिद्ध रहता है यूं तो अप्रैल माह में संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव रामजी अंबेडकरजी, शिक्षा को समर्पित ज्योतिबा फुले, सेन समाज के संत सेन जी की जयंती भी रहती है। निषाद जयंती हमें प्रभु श्री राम की वन यात्रा की याद दिलाती है, कैसे निषादराज जी ने प्रभु श्री राम जी का हर कदम पर साथ दिया था और प्रभु श्री राम ने उन्हें अपना अभिन्न मित्र माना है। ग्रामवासी और वनवासी की मित्रता अद्भुत थी हमें इससे प्रेरणा लेना चाहिए, वनवासी हमारे जीवन का एक प्रमुख अंग है, प्रकृति पूजक वनवासी हमें प्रकृति के समीप रहने का संदेश देते हैं।

इसी प्रकार पिछले दिनों **द कश्मीर फाइल्स** फिल्म से पूरे भारतवर्ष में एक नए प्रकार के विमर्श का जन्म हुआ है जो इस देश के बहुसंख्यक हिन्दूओं पर मुसल्मिों के द्वारा किए गए नरसंहार की जीती-जागती कहानी है। इससे पहले भी कश्मीर पर कई फिल्में बनी है जिन्होंने सत्य को घुमा फिरा कर और एकपक्षीय दिखाया है जिसमें पीड़ित हिन्दूओं को लेश मात्र भी स्थान नहीं मिला है। **द कश्मीर फाइल्स** 1990 में हुए जेनोसाइड या यू कहे नरसंहार का जीता जागता दस्तावेज है जिसे निर्माता निर्देशक विवेक रंजन अग्निहोत्री व उनकी धर्मपत्नी पल्लवी जोशी ने बड़े साहस के साथ बनाया है। फिल्म में 1990 में घटित नरसंहार का 5 प्रतिशत हिस्सा ही दिखाया है और वह इतना हृदय विदारक है कि पूरे भारतवर्ष में उसे देखने गए सिनेमा हॉल में दर्शक अपने भीगे हुए रुमाल के साथ निकले। इस सच को दिखाने की हिम्मत पिछले 32 वर्षों में पूरे इतिहास में किसी निर्माता निर्देशक ने नही की है, उल्लेखनीय है हम जिस देश में रहते हैं उसी देश के वासी अपने ही देश के अभिन्न अंग कश्मीर में हुए नरसंहार से अनभिज्ञ रहे, युवा पीढ़ी को यह फिल्म इस बात की जानकारी देती है की कैसे मुस्लिम समाज हिंदू समाज का नरसंहार केवल धर्म के आधार पर काफिर कहकर करता है।

द कश्मीर फाइल्स से 32 सालों बाद सच सामने आया

और भी अनेक नरसंहार का सच सामने आना बाकी है.........

डॉ. सोनाली नरगुन्दे

कश्मीर फाइल्स से निकली कश्मीरी पंडितों की पीड़ा पूरे देश ने देखी, सुनी और महसूस की। विवेक रंजन अग्निहोत्री ने एक आवाज को फिल्म में उठाया जो बरसों से अपने ही घर में शरणार्थी बनने की पीड़ा से जूझ रहे हैं। परंतु सोशल मीडिया देखने पर कुछ अलग ही दृश्य दिखाई देते हैं। कुछ का कहना है कि हमें तो इस फिल्म के ओटीटी पर आने का इंतजार है क्योंकि सिनेमा हॉल में भारत माता की जय के नारे और वहीं राष्ट्रवाद की अति देखकर इरीटेट नहीं होना चाहते। यह वह तथाकथित भारतीय बुद्धिजीवी हैं जो किसी भी विचार को खारिज करने में ही अपने को श्रेष्ठ मानते हैं। कश्मीर फाइल्स एक ऐसी फिल्म है जिसने एक बार फिर बता दिया कि सिनेमा कितना सशक्त माध्यम है और देश कैसे एकजुट हो सकता है। आजादी के बाद विभाजन की फिर वही त्रासदी कश्मीरी पंडितों के रूप में देश ने देखी पर तत्कालीन परिस्थितियां भिन्न थीं। आज सूचना समाज में इस तरह की किसी बात को दबाया नहीं जा सकेगा। यह फिल्म एक प्रयास थी जिसने समाज के ऐसे विचार को आवाज दी है जो युवाओं को एकजुट करने की ताकत रखती है। दिल्ली के जेएनयू में आजादी के नारे लगाने वाले चंद युवाओं को वास्तविक आजादी की कीमत नहीं पता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए न जाने कितने बलिदान हुए हैं जिनकी गिनती भी नहीं हैं। ऐसे में सिर्फ समय की नाव पर सवार नहीं रहा जा सकता है। यदि हम आजादी की बात करते हैं तो फिल्म ने ऐसे अनेक मुद्दों को खड़ा किया है। सेक्यूलर, राष्ट्रवाद, कट्टरपंथ, अल्पसंख्यक जैसे अनेक विषय आज के समाज के लिए चिंतनीय हैं। हम तथाकथित बौद्धिक होकर या फिर सेक्यूलर होने की बात कहकर सहिष्णुता का पाठ किसे पढ़ाना चाहते हैं। यदि इसे थोड़ा भिन्न प्रकार से देखें तो किसी भी समाज में अल्पसंख्यक तभी सुखी रह सकता है जब बहुसंख्यक उदार हो। भारत ने विभाजन के समय यही उदारता दिखाई परंतु कश्मीर के मुस्लिम बहुसंख्यकों से यह उदारता नहीं बन पाई और पंडितों के साथ हुए दुर्व्यवहार को पूरी दुनिया ने देखा। इसके बावजूद सहिष्णुता जैसी बातें हमें सुनने को मिलती हैं। आखिर यह ऐसे कैसे नैरेटिव समाज में बिना किसी कारण के खड़े हो जाते हैं। जब धारा 370 हटाई गई तब भी सरकार के खिलाफ ऐसी कितनी आवाज बुलंद हुई। आज भारत की सहिष्णुता ही है कि इतने विवाद, इतने विचार, इतने पंथ और इतने विरोधों के बावजूद मातृभूमि की जयकार करने वाले सिनेमाघर में मिल जाते हैं। परंतु उसके बावजूद भी लोगों के पेट में दुखने लगता है और सिर्फ सरकार को गरियाने के लिए सोशल मीडिया पर लिखते रहते हैं। **कुछ कश्मीरी मुस्लिम विद्यार्थियों से वास्ता पड़ा और वे सोशल मीडिया पर लिखते हैं हिन्दुस्तान की अवाम।** यहीं से डिग्री लेकर जब कोई इस प्रकार से लिखे तो अपार पीड़ा से गुजरना पड़ता है 'पर सेक्यूलर' बनो कहने वालों को कुछ समझाया नहीं जा सकता। यह उदारता तो हमारे रक्त में है, हमें इसे कहीं से लाना नहीं है परंतु पूरी दुनिया ने देखा है कि **कालांतर में प्रकट हुए धर्मों ने आतंक का सहारा लेकर ही अपने आप को स्थापित किया है।** कश्मीरी पंडितों की पीड़ा को दिखाकर विवेक ने सिनेमा के जिस पक्ष को सशक्तता से खड़ा

किया वह अद्भुत है। परंतु सेंसरबोर्ड पर एक बार फिर अचरज हुआ कि सिर्फ एक दृश्य के कारण फिल्म को **ए** प्रमाणन दिया जबकि इससे अधिक मार-धाड़ तो दक्षिण की फिल्मों में दिखाई देती है। यह भी उदारवादी व्यवस्था का उदाहरण है जब सरकार और नेतृत्व को जमकर कोसा जाता है ऐसे में किसी ऐसे विषय को उठाना भी अपने लिए विरोध के स्वर खड़े करना है। कश्मीरी पंडितों की पुनर्स्थापना पर बहुत सी चर्चाएं भी हुई परंतु जड़ से कटने के बाद किसी पेड़ को पुनः मिट्टी में रोपना और जीवंत करना कठिन है। इस काम में बरसों लग जाते हैं। एक बहस और खड़ी हुई कि पंडितों की संख्या तो सीमित थी परंतु कश्मीर में मरने वाले मुस्लिमों की संख्या पर किसी ने बात नहीं की। परंतु यह वह दृश्य है जो मीडिया ने हमारे सामने रखा है। स्वतंत्रता प्राप्ति में अपना सर्वस्व लगाने वाला मीडिया कालांतर में बाजारवाद का शिकार हुआ और ऐसे विचारों को अपने माध्यम से लोगों के समक्ष लाता रहा है जिसने समाज में अलगाववाद की लहर को और बढ़ाया है। जब लाभ की नाव पर सवार होकर कोई भी सूचना समाज में जाती है तो वह सिर्फ स्वार्थ की बात का ही प्रसार करेगी। ऐसा ही कुछ कश्मीर मुद्दे को लेकर मीडिया में लगातार बरसों से होता रहा है। आज भी मानवाधिकार के नाम पर आने वाली खबरें एक तरफा हैं। स्थानीय मुस्लिम विद्यार्थी दूसरे विश्वविद्यालयों में रहकर ऐसे शोध कर रहे हैं जिनकी परिकल्पना अपनी स्वयं की होती है और उसे साबित करने के लिए वे वैसे ही आंकड़ों को सामने लाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। कश्मीरी पंडितों के विस्थापन का दर्द, तत्कालीन सरकार पर उठते सवाल और उनका क्या होगा? जैसे ज्वलंत प्रश्न आज भी विद्यमान हैं परंतु मीडिया का काम दिशा निर्देशन करना भी होना चाहिए। भारत के लाखों सैनिकों के बलिदान पश्चात् यह बात ही बेमानी है क्योंकि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। आजादी सिर्फ नारे लगाने की नहीं बल्कि यह जीने की बात है। यह सिर्फ धर्म और राष्ट्रवाद जैसे शब्दों की बहस में पड़ने का समय नहीं वरन् इसे जीने का और जीवंत रखने का समय है। देश की अक्षुण्णता को देखने के लिए कर्नाटक में चली हिजाब बहस को आवाज देने वालों को भी चुनौती देने का समय है। यदि आज चुप रहे तो कल हमें हिसाब देना पड़ेगा। फिल्म में एक डॉयलॉग है कि हम देखेंगे। हां यदि आज के युवा ने कुछ नहीं किया तो उसके पास कुछ नहीं रहेगा सिवाय देखने के। भारत की सच्ची तस्वीर के लिए सूचना समाज को जगाना होगा और यह सशक्त और जागरूक युवा के भरोसे ही संभव है।

द कश्मीर फाइल्स - सिनेमाघर में संत समाज...!

हिंदू समाज के इतिहास में पहली बार हुआ है कि सिनेमाघर में किसी फिल्म को देखने के लिए धर्म प्रेमी संत समाज एकजुट होकर पहुंचा है।

'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म नहीं हमारे वास्तविक इतिहास की सच्चाई बयान करती हकीकत है। 1990 में जब पाकिस्तान से प्रेरित मुस्लिम लोगों ने मिलकर कश्मीर के रहवासियों को वहां से आतंक व नरसंहार कर पूरा कश्मीर खाली करवा लिया इसी सच्चाई को फिल्म में दिखाया गया है। अतः इसे सिनेमाघर में जाकर अवश्य देखें और इसके निर्माता निर्देशकों का हौसला बढ़ाएं ताकि वे भविष्य में हमारे इतिहास से जुड़ी हुई अन्य छुपी हुई बातों को भी सामने लाने का साहस कर सकें।

फिल्म से सच्चाई सामने आई है- मोदी जी

'द कश्मीर फाइल्स' पर कहा-वर्षों तक सच दबाया गया - मोदी जी ने कहा-'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म में जो दिखाया गया उस सच को सालों से दबाने की कोशिश हुई। उसी तरह 1977 की इमरजेंसी पर कोई फिल्म नहीं बना पाया। जब हमने 14 अगस्त भारत विभाजन को 'हॉरर डे' के रूप में याद करने का तय किया तो कई लोगों को बड़ी मुसीबत हो गई।

सामाजिक समरसता के कालजयी महापुरुष - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

डॉ.सुब्रतो गुहा

समय की धारा के साथ बहने वाले मानव कहलाते हैं परन्तु समय की धारा की दिशा और दशा ही बदलने वाले महामानव कहलाते हैं। ऐसे ही एक महामानव का जन्म मालवा प्रांत के महू नगर में 14 अप्रैल 1891 को हुआ। बालक का नाम भीमराव स्नेहमयी माता भीमाबाई और पिता रामजी सकपाल द्वारा दिया गया। जब बालक केवल तीन वर्ष का था तब पिता रामजी सकपाल ने सन् 1894 में महू में सेना की नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली और सपरिवार महाराष्ट्र के सतारा शहर में बस गये और उन्हें एक स्टोरकीपर की नौकरी भी मिल गयी। यहाँ पांच वर्ष की आयु में बालक भीमराव के सिर से माता का स्नेहपूर्ण साया उठ गया और इस सदमे से वह भावनात्मक रूप से टूट गया।

प्रारंभिक विद्यालयीन शिक्षा इसी सतारा शहर में पूर्ण करते समय बालक भीमराव को अनेक दुखद स्थितियों का सामना करना पड़ा। तत्कालीन रुढ़िवादी समाज में महार जाति के बालक भीमराव को छुआछूत का शिकार बनाया गया। अपनी कक्षा में सबसे होनहार विद्यार्थी होने के बाद भी केवल जाति के आधार पर भीमराव को कक्षा में अन्य विद्यार्थियों से अलग जमीन पर टाट बिछाकर बिठाया जाता था। भीमराव को प्यास लगती तो उसके लिए विशेष व्यवस्था अनुसार एक चपरासी बालक को छुए बिना ऊपर से पानी डालता और नीचे दोनों हाथों से बालक वही पानी पी लेता और जिस दिन वह चपरासी अवकाश पर रहता उस दिन बालक भीमराव को प्यासा ही रहना पड़ता। सन् 1900 में बालक भीमराव को सतारा के शासकीय विद्यालय में प्रवेश मिला और घर की आर्थिक स्थिति के कारण बालक भीमराव को पैदल ही विद्यालय जाना -आना पड़ता। एक दिन विद्यालय से घर लौटते समय अत्यधिक थकान के कारण बालक भीमराव एक बैलगाड़ी में बैठ गया परन्तु कुछ दूर जाने के बाद जैसे ही बैलगाड़ी चालक को बालक के महार जाति के होने का पता चला उसने धक्का देकर बालक को बैलगाड़ी से नीचे जमीन पर गिरा दिया। बालक के कपड़े कीचड़ से गन्दे हो गए परन्तु हम कह सकते हैं कि वह कीचड़ केवल उस बालक के दामन पर नहीं बल्कि तत्कालीन रूढ़ीवादी समाज के दामन पर लगा था जो जातिगत पहचान के आधार पर मनुष्यों से भेदभाव करती थी। परन्तु उसी समाज में कुछ सुखद अपवाद भी थे। बालक भीमराव के उसी विद्यालय के एक ब्राह्मण शिक्षक पंडित महादेव आंबेडकर ने अपने सबसे होनहार विद्यार्थी भीमराव के प्रति स्नेह और प्रेम को प्रमाणित किया और उसे जातिगत भेदभाव से बचाने हेतु विद्यालय के रिकॉर्ड में बालक को अपना उपनाम आंबेडकर दिया जिससे अब बालक का औपचारिक नाम भीमराव सकपाल से बदलकर भीमराव आंबेडकर हो गया।

सन् 1907 में मेट्रिक और 1910 में इंटरमिडीएट परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भीमराव ने सन 1912 में मुम्बई के प्रसिद्ध एलफिंसटोन महाविद्यालय से उच्च श्रेणी में बी.ए.की उपाधि प्राप्त की। फिर कुछ समय बरोडा के महाराजा सयाजीराव गाएकवाड़ की रियासत में नौकरी की और भीमराव की प्रतिभा से प्रभावित महाराजा ने अमेरिका और इंग्लैंड में भीमराव की उच्च शिक्षा प्रायोजित की जिसके फलस्वरुप उन्होंने अमेरिका के प्रसिद्ध कोलंबिया विश्वविद्यालय से एम.ए. एवं पी.एच.डी.उपाधि प्राप्त की और इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई पूर्ण कर बैरिस्टर बने।

भारत लौटकर महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में सेवाएं देने के बाद मुंबई उच्च न्यायालय में वकालत प्रारम्भ किया और साथ साथ स्वाधीनता आन्दोलन और जातिगत भेदभाव मिटाने हेतु सामाजिक आन्दोलनों का सफल नेतृत्व किया। सामाजिक आन्दोलनों में उनकी मुख्य मांग अनुसूचित जाति के भाई बहनों के लिए अलग मंदिरों के निर्माण की नहीं बल्कि वर्तमान सभी मंदिरों में हिन्दू धर्म के समस्त नर नारियों के साथ साथ प्रवेश की रहती थी क्योंकि वे सभी जातियों के हिन्दुओं को एकता के सूत्र में पिरोना चाहते थे। 1930 में नासिक शहर के प्रसिद्ध कालाराम मंदिर में दलितों को प्रवेश दिलवाने के आन्दोलन का उन्होंने सफल नेतृत्व किया और

1935 में इस विषय पर कानून बनवाने में योगदान दिया। 1927 में महाराष्ट्र के महाड़ में तालाब के पानी में दलितों के साथ समानता के व्यवहार हेतु उन्होंने सफल अभियान चलाया। सामाजिक समरसता और हिन्दू समाज की एकता के प्रति समर्पित पूज्य बाबासाहेब ने 1932 में ब्रिटिश सरकार द्वारा कम्युनल अवार्ड नीति के अंतर्गत सवर्णो और दलितों के लिए अलग अलग उम्मीदवार और मतदाता की व्यवस्था सम्बन्धी घोषणा का पुरजोर विरोध किया।

साम्यवादी विचारधारा में नास्तिकता की अवधारणा के घोर विरोधी पूज्य बाबासाहेब सनातन हिन्दू धर्म के विरोधी नहीं थे बल्कि हिन्दू समाज में उत्पन्न सामाजिक कुरीतियों के विरोधी थे और जब लम्बे समय तक अथक प्रयास के बाद भी उन्होंने पाया कि अभी भी अनेक कुरीतियाँ बची हैं तब 14 अक्टूबर 1956 को मुंबई में उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली जो पुण्यभूमि भारत से ही उत्पन्न हुआ है और जो लोग बौद्ध धर्म को हिन्दू धर्म से अलग मानते हैं उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि पूज्य बाबासाहेब के मार्गदर्शन में तैयार भारतीय संविधान में बौद्ध मत को हिन्दू धर्म के ही अंतर्गत मान्य किया गया है। 26 नवम्बर 1949 को भारत सरकार को संविधान की जो पाण्डुलिपि पूज्य बाबासाहेब ने सौंपी थी उसके अंत में उन्होंने अपने पूर्ण हस्ताक्षर इस प्रकार किये थे डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर जिससे उस दुष्प्रचार पर विराम लग जाता है कि वे हिन्दू देवी देवताओं के विरोधी थे। पुण्यभूमि भारत की वर्तमान और समस्त भावी पीढ़ियां सदैव पूज्य बाबासाहेब के प्रति कृतज्ञ रहेंगी जिनके अथक परिश्रम से तैयार भारतीय संविधान को 26 जनवरी 1950 को अपनाकर भारत एक गणतंत्र बना और तभी से देश के समस्त राज -काज संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार ही होते हैं। 1990 में वे मरणोपरांत भारत रत्न की उपाधि से विभूषित हुए। भारत सरकार के कानून मंत्री का दायित्व निभाते हुए सन् 1855 में लागू हिन्दू कोड बिल तथा अन्य अनेक कानूनी प्रावधानों द्वारा उन्होंने नारी-पुरुष समानता के साथ ही समस्त जातियों की कानूनी समानता का भी आधार तैयार किया। दिनांक 6 दिसम्बर 1956 को भौतिक रूप से वे संसार से विदा हो गए परन्तु उनके राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता सम्बन्धी सार्थक कार्य और विचार हम सभी भारतवासियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं और युग युगांतर तक करते रहेंगे।

सिख पंथ के गुरु श्री तेगबहादुरजी के चित्र का अनावरण भागवत जी द्वारा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव जी भागवत द्वारा संघ कार्यालय उज्जैन में सिखों के 9 वें गुरु श्री गुरुतेगबहादुर जी महाराज के चित्र का अनावरण आराधना भवन संघ कार्यालय उज्जैन में दिनांक 22/2/22 को प्रवास के दौरान किया गया। उल्लेखनीय है कि यह वर्ष गुरु तेगबहादुर साहिब जी की जन्मजयंती का 400 वां प्रकाश पर्व वर्ष भी है। सनातन धर्म की रक्षा हेतु गुरु साहेब द्वारा अपना बलिदान देकर और बाद में दसवें गुरु साहेब श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने खालसा पंथ की सर्जना कर मुगल आक्रांताओं से सशस्त्र संघर्ष कर पूरे भारतवर्ष में सनातन धर्म की रक्षा की थी।

ऐसे महान तपस्वी गुरु तेग़ बहादुर जी महाराज को हिन्दू धर्म के रक्षार्थ सर्वस्व बलिदान पर उन्हें **'हिन्द की चादर'** भी कहा जाता है। उज्जैन संघ कार्यालय पर चित्र का सरसंघचालक जी द्वारा अनावरण पर सकल हिन्दू समाज और स्वयंसेवकों में बहुत उत्साह है। अनावरण के शुभ अवसर पर सिख समाज के जत्थेदार स. सुरेन्द्र सिंह जी अरोरा, राष्ट्रीय सिख संगत के मालवा प्रांत उपाध्यक्ष स. इक़बाल सिंह जी गांधी, गुरुद्वारा सुख सागर के अध्यक्ष स. चरनजीत सिंह जी कालरा, गुरदीप सिंह जी जुनेजा, जसविंदर जी ठकराल, ज्ञानी महल सिंह जी, ज्ञानी चरण सिंह जी, ज्ञानी जी गीता कालोनी, ज्ञानी जी पटनी बाज़ार आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर क्षेत्र प्रचारक श्री दीपक जी विस्पूते, प्रांत प्रचारक श्री बलिरामजी पटेल, प्रांत सह प्रचारक श्री राजमोहन सिंह जी, उज्जैन विभाग कार्यवाह श्री पारस जी गहलोत, डॉ. हेडगेवार जन्मशताब्दी स्मृति न्यास के अध्यक्ष श्री उल्लास जी वैद्य आदि उपस्थित थे।

मालवा और निमाड का गौरवमय पर्व - गणगौर महापर्व

डॉ. ममता खेड़े, साहित्यकार

निमाड़ के लोक-रस की सतरंगी फुहार - यह गणगौर है। पूरा का पूरा गाँव बावला हुआ है- कल ग्यारस है। यह मामूली ग्यारस नहीं है, कल माता की मूठ रखी जाना है। सब जल्दी में है, सब उत्साह में है, सब कौतुहल में है। सम्पूर्ण गाँव माटी के रस में भींजा हुआ है- यह रस उत्सव का है, सेवा का रस है, आस्था का रस है, नई फसल का रस है, लोक के उत्साह में भींजे हुए गीत-नृत्य का रस है। यह रस माता का है, बेटी का है, नववधु के श्रृंगार का रस है, प्रौढ़ा की ठिठोली का रस है। यहां धनवानों के अन-धन का गान है और निर्धन की पीड़ा का सुर भी इसलिए यह माँ का उत्सव है- यह गणगौर है।

गणगौर किसी दिव्य लोक से उतरी कोई देवी नहीं है। वह राजरानी है और संघर्ष करती हुई सामान्य लौकिक स्त्री भी है। कभी वह गौरा, कभी सावित्री, कभी लक्ष्मी, कभी रोहिणी कभी कृषक कन्या है। लोक मन में वह 'रेणु' के रूप में प्रतिष्ठित है।

'रणु' बाई लोक समाज की लाड़ली पुत्री है। वह चैत्र में नौ दिन के लिए पीहर आती है। लोक-जन उसे मातृदेवी के रूप में पूजते है लेकिन ससुर पुत्री की तरह लाड़ लड़ाते है। सो चैत्र मास कृष्ण पक्ष एकादशी के दिन माता की मूठ (मुठी भर गेहूं, जो बाँस की टोकनी में बोते है) रखी जाती है। बच्चे-बूढ़े सब मिलकर **माता के मड़** (भीतर कक्ष) में चौगट (पीली मिट्‌टी से पुताई) करते है, रोज जवारों की सेवा होती है, देर रात तक कुँवारी कन्याएं, नव वधुएं प्रौढ़ाए माता के घर में धूम मचाती है। लोक गीत गाते हुए विदा होती माँ से सेवा का दाम मांगती है। गणगौर गीत में ग्रामीण गृहस्थी के दृश्य है।

'रेणु' नौ दिन पीहर आई है इसलिए यहां नौ दिन रेणु का ही रौब है। पलक झपकते ही तीज आ जाती है। अब गणगौर जगमाय (जगमाता) होगी।

बांस की टोकनियों में बाये गए गेहूँ अब जवारे बन गए है। अब कोई रीत, विधान नही, कोई सेवा नहीं। अब माँ माँ को बहन बनाकर घर ले जाएंगे, सखी की तरह ठिठोली करेंगे भोग लगाकर उत्सव मनाएंगे। पौ फटने से पहले ही सैकड़ो स्त्री-पुरूष बाड़ी के सामने खड़े होकर द्वार खटखटाएंगे - पुजारी से बोलेंगे, माँ को घर ले जाना है।

ग्रामीण सपत्नीक माँ के प्रतीक जवारो को रथ में रखेंगे। रथ को सिर पर रखकर गली सेरी में घुमेंगे। ग्राम कन्याओं के लिए लाई गई कोरी लुगड़ी पहनेगी माँ, कच्ची केरी का हार चढ़ेगी ज्वार, मक्का की नमोल (धानी-लाई) चने-दाने का भोग लगेगा, घर घर में माँ जायेगी, सब साथ मिलकर गुड-भत खाएंगे, पकवान चढेंगे, गाएंगे, नाचेंगे। कुमारिकाएं, बहुँएं झालरियों पर झुमेंगी। इस प्रकार गणगौर एक समग्र उत्सव है जो धर्म, जीवन, संस्कृति कला, साहित्य को एक साथ गूंथ कर लोक समाज के मनोमय संसार को एक इन्द्रधनुष देता हैं।

जनजाति संस्कृति की पारंपरिक पहचान भगोरिया

भगोरिया जनजाति संस्कृति की मौज मस्ती का ऐसा अनूठा पर्व है जो होलिका दहन के 7 दिन पहले यानी एक सप्ताह पूर्व से प्रारंभ होकर अंचल में लगने वाले हाट बाजार के दिन इस पर्व को फागुनी मस्ती से सराबोर कर देता है। अंचल का प्रत्येक जनजाति परिवार इस पर्व को आनन्द और गौरव से मनाता है ।

झाबुआ, धार, आलीराजपुर, बड़वानी जिले की वादियों याने मालवा -निमाड़ अंचल का यह पर्व झाबुआ जिले के ग्राम भगोर से प्रारंभ होना भी माना जाता है परंतु इसके पूर्व से भी इसके मनाए जाने की बात भी सामने आती है इसे जहां जनजाति संस्कृति का **प्रणय पर्व** भी कहा जाता है वहीं कुछ मान्यताएं इस बात को नकार यह कहती नजर आती हैं कि जनजाति संस्कृति को फागुन की मस्ती और उल्लास से जोड़ने वाला पारंपरिक पर्व है जिसे मनाने के लिए रोजगार के लिए देश के किसी भी हिस्से में गया हुआ जनजाति परिवार अपने घर लौट आता है। जनजाति संस्कृति पर केंद्रित भगोरिया पर्व एक ऐसा दर्पण है जो जनजातियों को एक रंग में तरबतर कर तमाम गिले-शिकवे दूर कर देता है इस पर्व के दौरान दारू, ताड़ी का सेवन कर ढोल, मांदल व बांसुरी की धुन पर नृत्य करना युवक-युवतियों की मस्ती का अनुपम नजारा दिखाता है । हाथों में रुमाल लेकर नृत्य करना प्रकृति की सुरम्य गोद में उमंग की नयनाभिराम छटा बिखेर देता है। विशेषकर चांदी के आभूषण जनजाति युवक-युवतियों, महिलाओं के श्रृंगार का विशेष हिस्सा होते हैं तो युवतियां एक रंग के परिधान में बसंती छटा बिखेरती हैं । टैटू गुदवाना भी इस समाज के विशेष शौक में शुमार है वैसे वर्तमान में यह पर्व आधुनिकता को भी अपना हिस्सा बनाकर अपने श्रृंगार में शामिल करने लगा है इस पर्व की एक मान्यता इसे फसलों के खेत से निकलकर घर आने के बाद अपना पूजा पर्व यानी देवताओं के प्रति आभार का पर्व मानकर शक्कर से बने कड़े (कंगन) नारियल, कांचली, गोटे, खजूर आदि को पूजा में शुमार कर भगोरिया की मस्ती में शामिल होना है तो दूसरी तरफ इसे प्रणय पर्व की संज्ञा में भी लिया जाता है । क्योंकि भगोरिया पर्व के दौरान सजे धजे युवक - युवतियां अपने पसंद के जीवनसाथी चुनने का भी मौका नहीं छोड़ते। याने पर्व के दौरान लड़का पसंदीदा लड़की को पान बीड़ा देता है जिसे अगर लड़की खा लेती है तो समझा जाता है कि लड़की ने लड़के का प्रणय आग्रह स्वीकार कर लिया है और वह उसकी जीवन संगिनी बनने को तैयार है ।

आधुनिक काल में जब जनजाति समाज की लड़कियों को टारगेट कर विधर्मी विशेषकर मुस्लिम और ईसाई उनसे विवाह कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं उसमें यहां परम्परा न सिर्फ उनको बचाती है वरन् समाज को भी प्रेरणा देती है। कुल मिलाकर भगोरिया पर्व जनजाति संस्कृति के लिए अपनी परंपरागत पहचान को चिरस्थाई बनाए रखने का पर्व है जिसकी फागुनी मस्ती समूचे देशवासियों को आकर्षित करती दिखाई देती है । **-झाबुआ से राजपुरोहित सुरेश सन्नाटा**

समाज को मर्यादा का पाठ पढ़ाने वाले प्रभु श्रीराम व रामायण की कुछ जानकारी

श्री रामजी का कुल परिचय :-

1 - ब्रह्मा जी से मरीचि हुए,

2 - मरीचि के पुत्र कश्यप हुए,

3 - कश्यप के पुत्र विवस्वान थे,

4 - विवस्वान के वैवस्वत मनु हुए.वैवस्वत मनु के समय जल प्रलय हुआ था।

5 - वैवस्वत मनु के दस पुत्रों में से एक का नाम इक्ष्वाकु था, इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया और इस प्रकार इक्ष्वाकु कुल की स्थापना की।

6 - इक्ष्वाकु के पुत्र कुक्षि हुए।

7 - कुक्षि के पुत्र का नाम विकुक्षि था।

8 - विकुक्षि के पुत्र बाण हुए।

9 - बाण के पुत्र अनरण्य हुए।

10- अनरण्य से पृथु हुए।

11- पृथु से त्रिशंकु का जन्म हुआ।

12- त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार हुए।

13- धुन्धुमार के पुत्र का नाम युवनाश्व।

14- युवनाश्व के पुत्र मान्धाता हुए।

15- मान्धाता से सुसन्धि का जन्म हुआ।

16- सुसन्धि के दो पुत्र हुए- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित।

17- ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत हुए।

18- भरत के पुत्र असित हुए।

19- असित के पुत्र सगर हुए।

20- सगर के पुत्र का नाम असमंज ।

21- असमंज के पुत्र अंशुमान हुए।

22- अंशुमान के पुत्र दिलीप हुए।

23- दिलीप के पुत्र भागीरथ हुए, भागीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था। भागीरथ के पुत्र ककुत्स्थ ।

24- ककुत्स्थ के पुत्र रघु हुए, रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया, तब से श्री राम का कुल, रघुकुल हो गया

25- रघु के पुत्र प्रवृद्ध हुए।

26- प्रवृद्ध के पुत्र शंखण थे।

27- शंखण के पुत्र सुदर्शन हुए।

28- सुदर्शन के पुत्र का नाम अग्निवर्ण था।

29- अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग हुए।

30- शीघ्रग के पुत्र मरु हुए।

31- मरु के पुत्र प्रशुश्रुक थे।

32- प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष हुए।

33- अम्बरीष के पुत्र का नाम नहुष था।

34- नहुष के पुत्र ययाति हुए।

35- ययाति के पुत्र नाभाग हुए।

36- नाभाग के पुत्र का नाम अज था।

37- अज के पुत्र दशरथ हुए।

38- दशरथ के चार पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए । इस प्रकार ब्रह्मा की उन्चालिसवी (39) पीढ़ी में श्रीराम का जन्म हुआ।

जन-जन के लोकप्रिय ग्रंन्थ रामायण की कुछ जानकारी

1. लंका में राम जी = 111 दिन रहे।
2. लंका में सीताजी = 435 दिन रहीं।
4. मानस में चोपाई संख्या = 4608 है व दोहा = 1074 है।
6. मानस में सोरठा संख्या = 207 व छन्द संख्या = 86 है।
8. सुग्रीव में बल था = 10000 हाथियों का।
9. सीता रानी बनीं = 33 वर्ष की उम्र में।
10. मानस रचना के समय तुलसीदास की उम्र = 77 वर्ष थी।
11. राम रावण युद्ध = 32 दिन व सेतु निर्माण = 5 दिन में हुआ।
12. नलनील के पिता = विश्वकर्मा जी हैं।
13. त्रिजटा के पिता = विभीषण हैं।
14. विश्वामित्र राम को ले गए =10 दिन के लिए।
15. राम ने रावण को सबसे पहले मारा था = 6 वर्ष की उम्र में।
16. रावण को जिन्दा किया = सुखेन बेद ने नाभि में अमृत रखकर।

देश दुनिया नी थोड़ी घणी

मालवी समाचार संवाददाता अशोक वर्मा

1) पाँच राज्य ना का विधानसभा चुनाव में देश की सबसे जूनी पार्टी कांग्रेस का सुपड़ा साफ हुई गया। उ.प्र. चुनाव में भाजपा की बम्पर जीत हुई ने योगी बाबा ने धूमधाम से दूसरी बार मुख्यमंत्री की शपथ ली । गोवा उत्तराखंड मणिुर में भी भाजपा का मुख्यमंत्री फिर से बण्या। पंजाब में कांग्रेस की नाव डूबी, आप पार्टी का भगवंत मान ने मुख्यमंत्री की शपथ ली। चुनाव परिणाम का बाद से कांग्रेस पार्टी में खूब उठा पटक चली री है। आखी नाव डुबई के ज मानेगा ।

2) सोवियत रूस ने युक्रेन पे हमलो करी दियो है। युक्रेन अमेरिका और नाटो देश की मदद से रुस के कड़ी टक्कर दी रियो है । इना युद्ध से ऐसो लगी रियो है कि अमेरिका युक्रेन का राष्ट्रपति जेलेंस्की के मोहरो बणय के रुस के कमजोर करनो चयी रियो हैं। पण युक्रेन बरबाद हुई रियो है उका लोग मरी रिया है परदेश मे शरण ली रिया हैं, एक पुटगरिया (हास्य कलाकार) के राष्ट्रपति बणय के भुगती रिया है।

3) 'द कश्मीर फाइल' नाम से एक फिल्म अई है। देशभर में इकी खूब चर्चा हुई री है । बत्तीस साल पैला कश्मीर में हिन्दूना पे वां का मुसलमान हूण ने सोची नी सकां ऐसा अत्याचार करी के कश्मीर हिन्दूना से खाली करइ लियो थो । उनी बात ना को थोड़ो सो अंस ली के विवेक अग्निहोत्री ने या फिल्म बणइ है। देशभक्त जनता, कश्मीरी पंडित ना का ऊपर हुआ जुल्म पेली बखत देखी के स्तब्ध हुई रिया है। गद्दारना की सुलगी पड़ी है। उल्टी सुल्टी बात करी रिया है । या पिक्चर सगला के घरभर समेत देखनी चईये ।

4) कर्नाटक हाईकोर्ट को फैसलो आयो है हिजाब के ली के। बात ऐसी है कि कर्नाटक का एक स्कूल में कुछ मुसलमान छोरीना बुर्खो पेरी के स्कूल गई तो उनके स्कूल में नी आणे दी , वी हाईकोर्ट चली गई । इना मामला से कर्नाटक में खूब उधम मची । बुर्खा पेरी-पेरी के बड़ा-बड़ा जुलूस निकाल्या । हिन्दू छोराना ने केसरिया दुपट्टा पेरी-पेरी के 'जय हनुमान' 'जय श्री राम' का नारा लगाते उनसे भी बड़ा-बड़ा जुलूस निकाल्या । हाईकोर्ट ने उनकी अर्जी खारिज कर दी है । पर फैसलो मान्यो नी है, अबे सुप्रीम कोर्ट जावेगा ।

वीरांगना झलकारी बाई

नारायणी माया बदेका, उज्जैन

अपना देस में, अपना भारतवर्ष में, इनी धरा पे असी-असी विभूत जनमी है के अपनी आज की पीढ़ी के उनका नाम तकात मालम नी। इना देस के, इनी भूम के, लिए अंगरेजी गुलामी से छोड़ावा वासते कित्ता जना ने अपनो बलिदान दियो, या बात अब फिर से दोरावा की है। गुलामी की जंजीर तोड़वा का लिये कित्ता मनख जंजीर में बंधाया, जंजीर से मार खय छाती पे तलवार झेली। आजादी को मान ने मेहत्व समझवा की भोत जरोत है।

आजादी की लड़य में झांसी की रानी जी का साते सात रेवा वाला, पूज झलकारी बाई को नाम भी पूजनीय है। झलकारी बाई को जनम झांसी राज का भोजला गाम में हुओ थो। जदे झलकारी बाई घणी कम उमर का था, उनकी माता देवशरन हुई गया था। उनका पिताजी ने उनके पालयो। नानपणा से ज झलकारी बाई घर का कामकाज करता ने जंगल ती लकड़ी लावता। एक वखत जंगल माय झलकारी बाई को सामनो वाघ ती वियो ने उनी वाघ के झलकारी बाई ने कुल्हाड़ी से मारी दियो।असी वीर थी झलकारी बाई।

उनको ब्याव झांसी की सेना का सिपई पूरनकोली के साते हुओ। झांसी आया पछे झलकारी बाई भी रानी लक्ष्मीबाई की सेना माय महिला दल की दुर्ग दल शाखा की सेनापति बनया। रानी लक्ष्मीबाई जसी सूरत थी झलकारी बाई की तो वी शत्रु के सामे रानी का भेस में युद्ध भी करता था।

झांसी पे अंग्रेज सेना को हमलो हुओ। रानी लक्ष्मीबाई घणी वीरता से लड़या पण सब तरप से घेराया। पेशवा की बाट जोती रानी के झलकारी बाई ने बोलयो के बालक के लय के जावो। झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई के भेजी के रानी का रूप में लड़य लड़ी ने जद तक रानी रण से बायर निकलया जदे तक अंगरेज सेना के भरम में राखयो पण भेदी ने भेद खोली दियो की इ रानी नी है,रानी का भेस में झलकारी बाई है। भेदियो नी होतो तो रानी का किला के भेदनो भोत कठन थो ने रानी लक्ष्मीबाई के जीतनो भी। झलकारी बाई ने घणी वीरता दिखय। अंगरेज भी उनकी ताकत ने हिम्मत से दंग रय गया था। आज रानी लक्ष्मीबाई के साते झलकारी बाई को बलिदान भी अमर है। राजा के साते प्रजा सेनिक सबका त्याग ने बलिदान को गान होनो चयये।

जामुन की लकड़ी से कुएं, बावड़ी के पानी का शुद्धिकरण

नाव की तली में जामुन की लकड़ी क्यों लगाते हैं, जबकि वह तो बहुत कमजोर होती है - क्या आप जानते हैं भारत की विभिन्न नदियों में यात्रियों को एक किनारे से दूसरे किनारे पर ले जाने वाली नाव की तली में जामुन की लकड़ी लगाई जाती है। सवाल यह है कि जो जामुन पेट के रोगियों के लिए एक घरेलू आयुर्वेदिक औषधि है, जिसकी लकड़ी से दांतों को कीटाणु रहित और मजबूत बनाने वाली दातुन बनती है, उसी जामुन की लकड़ी को नाव की निचली सतह पर क्यों लगाया जाता है। वह भी तब जबकि जामुन की लकड़ी बहुत कमजोर होती है। मोटी से मोटी लकड़ी को हाथ से तोड़ा जा सकता है। नदियों का पानी पीने योग्य कैसे बना रहता है बहुत कम लोग जानते हैं कि जामुन की लकड़ी एक चमत्कारी लकड़ी है। यह पानी के अंदर रहते हुए सड़कर खराब नहीं होती बल्कि इसमें एक चमत्कारी गुण होता है। यदि इसे पानी में डुबा दिया जाए तो यह पानी का शुद्धिकरण करती है और पानी में कचरा जमा होने से रोकती है। कितना आश्चर्यजनक है कि हम जिन पूर्वजों को अनपढ़ मानते हैं उन्होंने नदियों को स्वच्छ बनाए रखने और नाव को मजबूत बनाए रखने का कितना असरकारी समाधान निकाला।

बावड़ी की तलहटी में 700 साल बाद भी जामुन की लकड़ी खराब नहीं हुई - जामुन की लकड़ी के चमत्कारी परिणामों का प्रमाण हाल ही में मिला है। देश की राजधानी दिल्ली में स्थित निजामुद्दीन की बावड़ी की जब सफाई की गई तो उसकी तलहटी में जामुन की लकड़ी का एक स्ट्रक्चर मिला है। भारतीय पुरातत्व विभाग के प्रमुख श्री केएन श्रीवास्तव ने बताया कि जामुन की लकड़ी के स्ट्रक्चर के ऊपर पूरी बावड़ी बनाई गई थी। शायद इसीलिए 700 साल बाद तक इस बावड़ी का पानी मीठा है और किसी भी प्रकार के कचरे और गंदगी के कारण बावड़ी के वाटर सोर्स बंद नहीं हुए। जबकि 700 साल तक इसकी किसी ने सफाई नहीं की थी।

आपके घर में जामुन की लकड़ी का उपयोग - यदि आप अपनी छत पर पानी की टंकी में जामुन की लकड़ी डाल देते हैं तो आप के पानी में कभी काई नहीं जमेगी। 700 साल तक पानी का शुद्धिकरण होता रहेगा। आपके पानी में एक्स्ट्रा मिनरल्स मिलेंगे और उसका टीडीएस बैलेंस रहेगा। यानी कि जामुन हमारे खून को साफ करने के साथ-साथ नदी के पानी को भी साफ करता है और प्रकृति को भी साफ रखता है। कृपया हमेशा याद रखिए कि दुनियाभर के तमाम राजे रजवाड़े और वर्तमान में अरबपति रईस जो अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंता करते हैं, जामुन की लकड़ी के बने गिलास में पानी पीते हैं।

हिन्दी महीनों के नाम की कविता

प्रथम महीना चैत से गिन
राम जनम का जिसमें दिन।।
द्वितीय माह आया वैशाख।
वैसाखी पंचनद की साख।।
ज्येष्ठ मास को जान तीसरा।
अब तो जाड़ा सबको बिसरा।।
चौथा मास आया आषाढ़।
नदियों में आती है बाढ़।।
पांचवें सावन घेरे बदरी।
झूला झूलो गाओ कजरी।।
भादौ मास को जानो छठा।
कृष्ण जन्म की सुन्दर छटा।।
मास सातवां लगा कुंआर।
दुर्गा पूजा की आई बहार।।
कार्तिक मास आठवां आए।
दीवाली के दीप जलाए।।
नवां महीना आया अगहन।
सीता बनीं राम की दुल्हन।।
पूस मास है क्रम में दस।
पीओ सब गन्ने का रस।।
ग्यारहवां मासमाघ को गाओ।
समरसता का भाव जगाओ।।
मास बारहवां फाल्गुन आया।
साथ में होली के रंग लाया।।
बारह मास हुए अब पूरे।
छोड़ो न कोई काम अधूरे।।

नवादपुरा गाँव की तस्वीर बदली ग्रामवासियों ने

अमन व्यास

निमाड़ का शिवगंगा अभियान, जिसने जनजाति समाज के पारम्परिक तरीकों का उपयोग करके, झाबुआ जिसे सूखा घोषित कर दिया था, उसे जलयुक्त बना दिया है, ऐसे कितने ही छोटे -बड़े नवाचार निमाड़ में हो रहे हैं, जो धीरे -धीरे अब दुनिया के सामने आ रहे हैं। 2030 आते-आते निमाड़ की पूरे विश्व में एक समृद्ध पहचान होगी, यहाँ दुनिया भर से पर्यटक घूमने आएंगे, नया सीखने आएंगे और कैसे अपने पारम्परिक कार्यों से चाहे वह गौ पालन हो, जैविक कृषि हो अथवा पर्यावरण व प्राकृतिक उपचार हो यह निमाड़ से सीखेगी और मेरे इस प्रबल विश्वास का जो आधार नवादपुरा गाँव का कायाकल्प।

नवादपुरा इन्दौर से 145 और धार से 85 किलोमीटर दूर, माँ नर्मदा के तट पर बसा हुआ जनजाति बहुल गाँव है, गाँव की जनसंख्या लगभग 1200 है, आज यह गाँव देश भर में गौ-पर्यटन का, जैविक कृषि का केंद्र बनकर सबके सामने उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हुआ है, आज गौ-पालन के फलस्वरूप कई ग्रामीणों को रोजगार मिला है और जैविक कृषि के कारण न केवल ग्रामीण रोगमुक्त हो रहे हैं वरन् अधिक अन्न प्राप्त होने के साथ ही गाँव के रसायन के नाम पर व्यय होने वाले लाखों रूपये भी बच रहे हैं। ग्रामीणों ने 22 एकड़ भूमि पर भव्य और दिव्य गौशाला का निर्माण करवाया है, ग्रामीणों ने जनभागीदारी से इस गौशाला में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, गौशाला भव्य स्तम्भों पर टिकी है, सुंदर झूमर लगाए हैं, सुन्दर पीवर ब्लाक लगाए है, भव्य मन्दिर, विशेष नस्ल के चारे के लिए चारागाह व नवग्रह नक्षत्र वाटिका बनाई गई हैं, फलों के बहुत से पौधे लगाए गए हैं।

गौशाला ग्रामीणों के लिए रोजगार और आय का बहुत बड़ा स्रोत बन रही है, गाय के गोबर व गोमूत्र से जैविक खाद बनाई जा रही है, जिसका उपयोग खेतों में किया जा रहा है, धीरे-धीरे सम्पूर्ण गाँव जैविक कृषि की ओर अग्रसर हो गया है, जिससे गाँव को लगभग एक करोड़ रुपए की प्रतिवर्ष बचत हो रही हैं, किन्तु एक अप्रत्यक्ष बचत भी ग्रामीणों को हो रही है और यह बचत है दवाइयों पर होने वाले व्यय से, दरअसल जैविक व प्राकृतिक कृषि के कारण आज ग्रामीणों में बीमारी का प्रतिशत भी घटा है, आज इन्ही कारणों से दूसरे ग्रामों के किसान भी जैविक कृषि सीखने नवादपुरा में आ रहे हैं इन आगन्तुक किसानों के लिए गाँव में एक प्रयोगशाला भी बनाई गई है जहाँ जैविक कृषि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

गाय के गोबर से कंडे, दीपक व प्रतिमायें बनाई जाती हैं इसी के साथ सम्पूर्ण गाँव को गो-पर्यटन का केंद्र बनाया जा रहा है, इसलिए गाँव में गाय के गोबर व मिट्टी से सर्वसुविधायुक्त मड-कॉटेज बनाये जा रहे हैं, यहाँ आने वाले पर्यटकों को मिट्टी के पात्रों में निमाड़ के प्रसिद्ध व्यंजन परोसे जाएंगे, साथ ही रात्रि में लोकनृत्य आदि का आयोजन किया जाएगा, बुकिंग के लिए एक वेबसाइट भी लांच की जायेगी। गाँव में स्वच्छता का स्तर इंदौर की तरह ही है, गाँव में सर्वदूर पक्की सड़कें हैं, और लहलहाते हुए छायादार वृक्ष हैं।

सम्पूर्ण गाँव खुले में शौच से मुक्त है, गाँव के प्रत्येक घर में शौचालय हैं। नवादपुरा, पहले एक ऐसा गाँव जहाँ अधिकाँश ग्रामीण शाम होते ही शराब के नशे में धुत्त हो जाते थे, किन्तु सतत जागरूकता अभियानों और विशेष प्रयोगों ने इस गाँव को शराब मुक्त गाँव बना दिया है। गाँव में पीने के स्वच्छ पानी के लिए आधुनिक व्यवस्था की गई है, स्वच्छ पानी की एक मशीन लगाई गई है, जिसमें कार्ड स्वाइप करने पर दो रूपये में बीस लीटर पीने का स्वच्छ पानी मिलता है।

गाँव में जनभागीदारी से विद्यालय को भी सर्व-सुविधायुक्त बनाया गया हैं, विद्यालय में कैमरे, बड़े मैदान इत्यादि की समुचित व्यवस्था है, अतिथि शिक्षकों से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा गाँव में ही मिल रही हैं। कुल मिलाकर नवादपुरा गाँव में बहुत कुछ हो रहा है, एक दशक से गाँव में कायाकल्प करने का अभियान प्रारम्भ हुआ और आज गाँव आत्मनिर्भरता की स्थिति को प्राप्त हो रहा है, हमारा आग्रह है आप परिवार सहित बहुत जगह घूमने जाते होंगे,एक बार नवादपुरा भी जाइए, बहुत प्रेरणा मिलेगी।

विश्व की सबसे पुरातन, वैज्ञानिक काल गणना का केन्द्र उज्जैन

विश्व को वैज्ञानिक कालगणना देने वाली सनातन संस्कृति, वैदिक संस्कृति, भारतीय संस्कृति, हिन्दू संस्कृति ही है। जो पूरे पृथ्वी पर समय का निर्धारण करती थी जिसका केन्द्र उज्जैन स्थित वैधशाला जो कि पृथ्वी के मध्य स्थित है यही से होता था। भारत का कैलेंडर पंचाग ज्योतिर्विज्ञान पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर है, ईसा से भी अनेक वर्षों पूर्व।

फिर यह भिन्न कैलेंडर के उद्भव का क्या कारण है? दरअसल सभ्यताओं और संस्कृतियों को साम्राज्यवादी विचारों का सामना करना पड़ा, जिसका उल्लेख राज्य और उन पर होने वाले आक्रमणों में कम ही मिलता है। वैज्ञानिक अवधारणाओं में भारतीय प्राचीन सिद्धांत किस प्रकार से पछाड़ दिया गया यह आज का आहत प्रश्न है। काल गणना में पृथ्वी और आकाश मण्डल के गोल होने से स्थान को ही सापेक्ष, मान कर आगे बढ़ाने का काम किया। आइये हमारी काल गणना और उसके मात्रक जो कि वैज्ञानिक दृष्टि से परिपूर्ण है।

कालगणना और इसके मात्रक :-

6 प्राण (Breath) = 1 पल (विनाडी) = 24 Seconds

60 पल(विनाडी)=1नाडी(=घटी=घड़ी)= 24 Minutes

2 घटी = 1 मुहूर्त् = 48 Minutes

60 नाडी (घटी) = 30 मुहुर्त् = 1 अहोरात्र = 24 Hours

7 अहोरात्र = 1 सप्ताह

2 सप्ताह = 1 पक्ष

2 पक्ष = 1 माह

2 मास = 1 ऋतु

3 ऋतु = 1 अयन

2 अयन = 1 सम्वत् = 1 वर्ष

360 वर्ष = 1 दिव्य वर्ष

सतयुग = 4800 दिव्य-वर्ष = 17,28,000 वर्ष

त्रेता = 3600 दिव्य-वर्ष = 12,96,000 वर्ष

द्वापर = 2400 दिव्य-वर्ष = 8,64,000 वर्ष

कलियुग = 1200 दिव्य-वर्ष = 4,32,000 वर्ष

चतुर्युग = महायुग = दिव्ययुग = देवयुग = (सतयुग + त्रेतायुग + द्वापरयुग + कलियुग)

1 चतुर्युग = 43,20,000 वर्ष

71 चतुर्युग = 1 मन्वन्तर = 30,67,20,000 वर्ष

1 सन्धिकाल = 3 चतुर्युग = 1,29,60,000 वर्ष

14 मन्वन्तर + 2 सन्धिकाल = 1000 चतुर्युग

1000 चतुर्युग = 1 सृष्टि = 1 कल्प = 1 ब्राह्म-दिन = 4 अरब 32 करोड़ वर्ष

1000 चतुर्युग = 1 प्रलय = 1 विकल्प = 1 ब्राह्म-रात्रि = 4 अरब 32 करोड़ वर्ष

2000 चतुर्युग = 1 ब्राह्म-अहोरात्र = 8 अरब 64 करोड़ वर्ष

30 ब्राह्म-अहोरात्र = 1 ब्राह्म-मास

12 ब्राह्म-मास = 1 ब्राह्म-वर्ष

100 ब्राह्म-वर्ष = 1 परा = 1 महाकल्प

मुक्ति की अवधि 1 पराकाल की होती है.

अभी 'श्वेत वराह' नामक प्रथम ब्राह्म-दिन के 7 वें 'वैवस्वत' नामक मन्वन्तर के 28 वें चतुर्युग का कलियुग चल रहा है. विक्रम सम्वत् 2079 (ईसाई वर्ष 2022) में हमारे वैदिक सम्वत् निम्न है

कल्प सम्वत् = 1,97,38,13,123 वर्ष

मानव सम्वत् = 1,96,08,53,123 वर्ष

वेद सम्वत् = 1,96,08,53,118 वर्ष

कलियुग सम्वत् = 5124 वर्ष

14 मन्वंतरों के नाम – 1. स्वायम्भुव 2. स्वारोचिष 3. औत्तमेय 4. तामस 5. रैवत 6. चाक्षुष 7. वैवस्वत 8. सावर्णि 9. दक्षसावर्णि 10. ब्रह्मसावर्णि 11. धर्मसावर्णि 12. रूद्रसावर्णि 13. देवसावर्णि (रौप्यसावर्णि) 14. इन्द्रसावर्णि (मौत्यसावर्णि)

सन्दर्भ ग्रन्थ - ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, मनुस्मृति, सूर्यसिद्धान्त आदि

स्वावलंबी बनाने हेतु कार्यों के अवसर बढ़ाने का प्रस्ताव किया पारित

विश्व के सबसे बड़े सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अ.भा. प्रतिनिधि सभा की बैठक 11 से 13 मार्च तक गुजरात के कर्णावती में आयोजित हुई। **इसमें भारत को स्वावलंबी बनाने के लिए कार्यों के अवसर बढ़ाना आवश्यक** नामक प्रस्ताव पारित हुआ।

प्रस्ताव के अनुसार, विगत वर्षों में कोविड के कारण रोजगार मे विघ्न पैदा हुए हैं और सम्पूर्ण समाज को इसका महत्व भी ज्ञात हुआ। सम्पूर्ण समाज को मिलकर मानव केंद्रित, पर्यावरण के अनुकूल, श्रम प्रधान तथा विकेंद्रीकरण एवं लाभांश का न्यायसंगत वितरण करने वाले भारतीय आर्थिक प्रतिमान (मॉडल) को महत्व दिया जाना चाहिए, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग और कृषि आधारित उद्योगों को संवर्धित करता है। ग्रामीण रोजगार, असंगठित क्षेत्र एवं महिलाओं के रोजगार और अर्थव्यवस्था में उनकी समग्र भागीदारी जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा देना चाहिए। हमारी सामाजिक परिस्थिति के अनुरूप नई तकनीकी तथा सॉफ्ट स्किल्स को अंगीकार करने के प्रयास करना अनिवार्य है।

अ.भा.प्र. सभा ने नागरिकों से आह्वान किया कि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए धारणक्षम एवं समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु रोजगार सृजन के भारत केंद्रित प्रतिमान (मॉडल) पर कार्य करें। साथ ही समाज के सभी घटकों का आह्वान करते हुए कहा कि विविध प्रकार के कार्य अवसरों को बढ़ाते हुए हमारे शाश्वत मूल्यों पर आधारित एक स्वस्थ कार्य-संस्कृति को प्रस्थापित करें, जिससे भारत वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर पुनः अपना उचित स्थान अंकित कर सके।

यह वर्ष स्वाधीनता का 75 वां वर्ष है, सम्पूर्ण देश इसे अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है, हमें **'स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर'** जाना हैं। **'स्व'** आधारित जीवन पद्धति को पुनः अंगीकार करना है।

अमृत महोत्सव के वर्ष समय में हमें यह भी ध्यान में आना चाहिए कि स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए भारत के प्रत्येक जन ने संघर्ष किया था और इसलिए यह वर्ष उन सभी विस्मृत नायकों का स्मरण करने और उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का भी है।

यह जानकारी मालवा प्रांत के संघचालक डॉ. प्रकाश शास्त्री ने पत्रकार वार्ता में दी। साथ में प्रान्त सहकार्यवाह विनीत नवाथे भी उपस्थित थे, उन्होंने बताया कि सरकार्यवाह का 2021-22 में 19 प्रांतों में प्रवास हुआ। मार्च 2021 से मार्च 2022 तक की कार्यस्थिति के विषय में भी वृत्त प्रस्तुत किया। मार्च 2021 में संघ कार्य 34,569 स्थानों पर था, जो बढ़कर अब 38,390 स्थानों तक पहुंच गया है। इसी तरह शाखाएं 55,652 से बढ़कर 60,929 साप्ताहिक मिलन 18,553 से बढ़कर 20681 तथा संघ मंडली की संख्या 7655 से बढ़कर 7923 हो गई हैं।

मालवा प्रांत में 6 माह में शाखाओं की संख्या 290 बढ़ गई - डॉ. शास्त्री ने बताया कि मालवा प्रांत में गत वर्ष संपन्न विशिष्ट कार्यक्रमों का वृत्त प्रतिनिधि सभा में प्रस्तुत किया गया। मालवा प्रांत में प्रत्येक गतिविधि तथा कार्य विभाग के सम्मेलन की योजना के अनुसार, 28 जिलों में कुल 284 कार्य विभाग गतिविधि सम्मेलन संपन्न हुए। इनमें 10,604 कार्यकर्ता सम्मिलित रहे।

मालवा प्रान्त में प्रत्येक गतिविधि तथा कार्यविभाग के सम्मेलन की योजना के अनुसार 28 जिलों में कुल 284 **कार्यविभाग गतिविधि सम्मेलन** सम्पन्न हुए, जिनमें 10,604 कार्यकर्ता सम्मिलित रहे। सभी कार्यविभागों की टोलियों की पूर्णता व कार्यकर्ताओं में कार्य की स्पष्टता की दृष्टि से यह अभिनव प्रयोग अत्यंत उपयोगी रहा।

46 वर्षों से जारी अखण्ड पाठ का वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड से सम्मान

बड़वाह। 1976 से निरंतर जारी अखंड पाठ करने के लिए काटकुट के पास स्थित ग्राम ओखला के ओखलेश्वर धाम मंदिर का नाम **वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड** में शामिल करने के बाद प्रतिनिधि मंडल ने धाम आकर पूजारी सुभाष प्रसाद पुरोहित को अवार्ड सर्टिफिकेट दिया। बीते 46 वर्षों से जारी पाठ चलने के साथ ही इस मंदिर की मान्यताएं द्वापर युग से भी जुड़ी हुई हैं। वहीं कहा जाता है कि यहां खुद हनुमानजी आए थे। जिसका जिक्र नर्मदा पुराण में देखा जा सकता है। मंदिर से जुड़े गिरीश पुरोहित बताते हैं कि मेरे दादाजी ओंकारप्रसाद पुरोहित ने अक्षय तृतीया के मौके पर 2 मई 1976 से यहां रामायण पाठ शुरु किया था। जिसके बाद मंदिर के भक्त जुड़ते चले गए। आस्था बढ़ती गई और आज 46 साल पूरे होने को आए लेकिन किसी भी परिस्थिति में यहां पाठ कभी बंद नहीं हुआ। इसी चमत्कारिक कार्य की जानकारी जब वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड वालों को पता चली तो उन्होंने तकरीबन आठ माह पहले मंदिर का निरीक्षण कर यहां के संबंध में जानकारी जुटाई थी। जिसके बाद अब मंदिर में आकर बड़ोदरा (गुजरात) की रमन बेन भट्ट एवं वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड संस्था के संतोष शुक्ला द्वारा अवार्ड दिया गया।

लंदन, यूरोप व इंग्लैंड से मिली बधाइयां - वर्ल्ड बुक ऑफ रिकाड्र्स के अध्यक्ष संतोष शुक्ला ने बताया कि इस अखंड रामायण पाठ के लिए अवार्ड मिलने पर इंग्लैंड के सांसद वीरेंद्र शर्मा, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड यूरोप के हेड विली जैजलर, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकाड्र्स चैयरमेन लंदन के डॉ. दिवाकर सुकुल ने बधाइयां दीं।

दुर्लभ प्रतिमा से है मंदिर की पहचान - मंदिर के पुजारी गिरीश पुरोहित ने बताया रुद्रावतार हनुमानजी की दुर्लभ प्रतिमा है। इस बारे में मान्यता है कि राम रावण युद्ध से पहले रामेश्वर में शिवलिंग की स्थापना के लिए हनुमान जी नर्मदा की सहस्त्रधारा धावड़ी घाट से शिवलिंग लेकर लौट रहे थे। यहां महर्षि वाल्मीकि का आश्रम होने के कारण वे कुछ समय के लिए यहां रुके थे। हालांकि जब तक हनुमानजी शिवलिंग लेकर रामेश्वर पहुंचे तब तक वहां महादेव की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी थी। ऐसा माना जाता है कि वह शिवलिंग आज भी तमिलनाडु के धनुषकोटि में स्थापित है। इसी मंदिर परिसर में एक शिव मंदिर भी है। जिसके बारे में मंदिर के महंत सुभाष पुरोहित बताते हैं यह द्वापर काल का है। यहां तीन शिलालेख भी उत्कीर्ण हैं। स्पष्ट नहीं होने के कारण उन्हें पढ़ा नहीं जा सकता। एक मान्यता यह भी है कि यह मंदिर त्रेतायुग के राजा श्रियाल के समय का है। च्यवन ऋषि, मार्कण्डेय ऋषि, विश्वामित्र आदि ऋषियों की तपस्थली भी रहा है। रेवाखंड का यह क्षेत्र जनश्रुति के अनुसार इस क्षेत्र में स्वायंभुव मनु व शतरूपा ने भी तपस्या की थी। यहां एक कुंड भी है। **संकलन विजय यादव, बड़वानी**

युवती की शिकायत पर केस दर्ज, आरोपित गिरफ्तार

मुस्लिम फैजान 4 साल तक विक्रम बन हिंदू युवती से करता रहा दुष्कर्म

सतना में सालभर में तीसरी बार लव जिहाद का मामला सामने आया है। कोतवाली थाना क्षेत्र में एक मुस्लिम युवक ने हिंदू युवती के साथ चार वर्ष तक शादी का झांसा देकर शारीरिक शोषण किया। आरोपित ने युवती को अपना नाम विक्रम बताया था, जिसके कारण युवती उस पर विश्वास करती रही। जब युवती ने उस पर शादी करने का दबाव बनाया तो आरोपित ने इन्कार कर दिया। उसने युवती को जान से मारने की धमकी भी दी। इसके बाद युवती ने कोतवाली थाना में गुरूवार को शिकायत दर्ज करा दी। पुलिस ने आरोपित पर दुष्कर्म सहित मप्र धार्मिक स्वतंत्रता कानून के तहत मामला दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है।

यह है पूरा मामला : सतना शहर के सिटी कोतवाली थानांतर्गत 25 वर्षीय हिंदू युवती ने बताया कि फैजान कुरैशी 30 पुत्र मो. इकबाल ने अपना नाम विक्रम बताकर उससे दोस्ती की थी। अरोपित ने शादी करने का वादा किया और धवारी के एक किराये के मकान में चार साल तक उसका शारीरिक शोषण करता रहा। जब युवती ने युवक पर शादी का दबाव बनाया तो उसने शादी से इन्कार कर दिया। पीड़िता का कहना है कि बुधवार को आरोपित ने उसके किराए के मकान में आकर दुष्कर्म किया पीड़िता ने गुरूवार को मकान मालकिन के साथ जाकर कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई।

ईसाई आतताइयों के विरुद्ध वीरगाथा आर आर आर

कुछ फ़िल्में मन मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ देती है जो हमें सोचने और मनन करने पर विवश करती है ऐसी ही फ़िल्म है आर आर आर

ईसाई आतताइयों के विरुद्ध वीरगाथा फि ल्म आर आर आर यदि मिशनिरियों की फेंकी हुई हड्डियां चूस कर जीने वाले इतिहासकारों द्वारा सभ्यता को दिए गए घावों पर मलहम लगाना हो... तो देखिये राजामौली की आर आर आर....ऐसी फि ल्म जिसे सुन कर रोंगटे खड़े हो जाएं, जिसे देख कर छाती तन जाय, जिसे देख-सुन कर मन में राष्ट्र और धर्म के प्रति समर्पण बढ़ जाय।

ईसाई साम्राज्यवाद से वनवासियों का संघर्ष। अपने समाज की एक बच्ची के लिए दुनिया के सबसे क्रुर साम्राज्य से अकेले ल जाने वाले वनवासी योद्धा भीम की कहानी है असभ्य और बर्बर अंग्रेजों से लड़ने वाले योद्धा राम की कहानी है। लगातार हजार वर्षों तक युद्ध मे जी कर भी यदि भारत पूरे गर्व साथ एक ब ी शक्ति के रूप में ख ा है, तो केवल इसलिए कि उसके इतिहास के हर पन्ने में कोई न कोई भीम अपने शौर्य की महागाथा छो कर गया है। भारत के पौराणिक इतिहास पर संदेह करने वाले मूर्ख चाहें तो देख सकते हैं कि हर कालखंड में असंख्य ऐसे योद्धा हुए हैं जिन्होंने भगवान श्रीराम से प्रेरणा ली, रामत्व को धारण किया, और राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए शबरी से सत्ता तक यात्रा, वनवासियों को सताने वाले राक्षसों का वध कर उनको उनका हक दिलाकर उनके साथ पैदल पूरी की। राजामौली उस तपस्या को, उस शौर्य को पर्दे पर उतारने में सफल हुए हैं।

सत्रहवीं से बीसवीं शताब्दी तक भारत पर ईसाइयों ने जो अत्याचार किया है, वह क्रुरता की पराकाष्ठा है। दस-दस वर्ष के बच्चों को पादरियों के सामने फांसी पर लटकाया गया, सँ सी से स्त्रियों के स्तन नोचे गए... धर्म परिवर्तन नहीं करने पर गाँव के गाँव फूँक दिए गए। नन्हे बच्चों को दौ ा कर गोली मारी गयी, जिसे जब चाहा उठा कर दास बना लिया । इस अत्याचार पर अब बातें कम होती हैं, पर बातें होनी चाहिये। राजमौली ने इस पर बात की है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

हमारे नायकों पर बालीवुड में भी फि ल्में बनती हैं, राजामौली नया क्या कर रहे हैं? तो इसका उत्तर यह है कि मुम्बई ने केवल पराजय की कहानी गढ़ी है। उन्होंने उन्ही कथाओं पर फिल्में बनाई जिसमें हमारा नायक अंततः पराजित हो कर हार जाता है। ताकि जनता याद रखे कि हम ल े तो, पर हर बार पराजित हो गए। पानीपत, पद्मावत,.... यहाँ तक कि बाजीराव जैसे विजेता पर भी मुम्बइया कैमरा चला तो कहानी दुखांत बना दी गयी। पर राजामौली विजय का गर्व ले कर आये हैं। जीत का जश्न ले कर आये हैं, अत्याचारी के अंत का सुकून ले कर आये हैं।

भारत के वनवासियों पर सबसे अधिक अत्याचार ईसाइयों ने किया है। भीमा, बिरसा भगवान, टंट्या मामा, सिद्धू मुर्मू, झलकारीबाई, तिलका माँझी, तेलंगा खडिया... ईसाइयों ने जो कहर इन भोले वनवासियों पर ढाया, वह क्रुरता का सबसे भयावह इतिहास है। फिर भी आज वे वनवासियों के सबसे बड़े हितैषी होने का ढोंग करते हैं। आर आर आर इस ढोंग कर कठोर प्रहार करती है।

बात फि ल्म की करें तो राजामौली ने अपनी एक विशाल छवि बना ली है। बड़ा कैनवास, भव्य फिल्मांकन, शानदार कहानी, वर्षों तक याद रहने वाले दृश्य, रुचिकर संगीत ... वे इस फिल्म में भी पूर्णतः सफल रहे हैं। रामचरण तेजा अद्भुत हैं, एनटीआर शानदार लगे हैं। अजय देवगन हवा के झोंके की तरह आये हैं। आलिया बोझ लगीं हैं, उनसे अधिक प्रभावशाली तो वह ब्रिटिश अभिनेत्री लगी है। कुल मिला कर जबरदस्त... देख कर आइये ! अच्छा लगेगा । **समीक्षा - अरूण सपकाले**

लव जिहाद कानून पारित होने के एक साल मे 67 केस दर्ज

इंदौर- खंडवा में ज्यादा केस जनजाति लड़कियां और कॉलेज छात्राएं शिकार

प्रदेश में लव जिहाद के सबसे ज्यादा मामले इंदौर और खंडवा में सामने आए हैं। छोटे शहरों में लव जिहाद का सबसे ज्यादा शिकार जनजाति युवतियां हुई हैं। इनमें आठवी-दसवीं तक पढ़ीं नाबालिग लड़कियां ज्यादा हैं, जो सोशल मीडिया पर सक्रिय थीं, जबकि भोपाल-इंदौर जैसे बड़े शहरों में कॉलेज छात्राएं और जॉब करने वाली युवतियां शिकार हुई हैं।

पीड़िताओं का आरोप है कि सोशल मीडिया पर मुस्लिम लड़कों ने हिंदू बनकर (पहचान छिपाकर) दोस्ती की। उन्हें शादी का झांसाा दिया। जब इनके झांसे में आ गई तो शर्त रख दी कि धर्म परिवर्तन करोगी तो ही शादी होगी। धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम पारित होने के एक साल में प्रदेश में अब तक ऐसे मामलों में 67 केस दर्ज हुए हैं। इनमें से 24 मामले इसी साल जनवरी में दर्ज हुए। 36 मामलों में 109 आरोपी बनाए हैं। भोपाल-इंदौर में मिले आंकड़ों पर नजर डालें तो यहां के केसों में 50 प्रतिशत सामान्य वर्ग की युवतियां हैं।

शादी को शून्य करने के लिए राज्य सरकार ने बनाया कानून- धर्म परिवर्तन की घटनाओं पर लगाम लगाने के लिए मध्यप्रदेश विधानसभा में 8 मार्च को मध्यप्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता विधेयक-2021 पारित किया गया था। राज्यपाल की अनुमति के बाद मध्यप्रदेश राजपत्र (असाधारण) में वह अधिनियम 27 मार्च 2021 को प्रकाशित हो गया है। इसका उद्देश्य दवाब बनाकर धर्म परिवर्तन करवाकर शादी करना है। ऐसी शादी को शून्य करने के लिए कानून लाया गया है।

भोपाल-इंदौर पुलिस से मिले आंकड़ों पर नजर डालें तो यहां के केस में 50 प्रतिशत सामान्य वर्ग की युवतियां शामिल हैं। भोपाल के टीला जमालपुरा, कोहेफिजा, कमला नगर और अशोका गार्डन में सामान्य वर्ग की युवतियों ने केस दर्ज करवाया है। इधर, इंदौर के कमिश्नर, हरिनारायणचारी मिश्र ने बताया कि लगभग 13 मामले दर्ज हुए हैं। इसमें सामान्य के अलावा ओबीसी और अन्य वर्ग की पीडिताएं हैं। **उधर, दूसरी ओर खंडवा, उज्जैन, धार, झाबुआ, बड़वानी, खरगोन, रीवा जिलों में 95 प्रतिशत मामलों में जनजाति व कुछ अनुसूचित जाति की युवतियों को शिकार बनाया गया।**

जनजाति युवतियां इसलिए टारगेट पर क्योंकि वे किसी भी जाति के युवक से शादी करें लेकिन आरक्षण का लाभ समाप्त नहीं होता, जबकि एससी की लड़की का आरक्षण खत्म हो जाता है।

जांच में धर्म परिवर्तन की बात सामने आई - इंदौर में 13 केस दर्ज हुए। लड़कियों ने बयान दिए थे कि उन पर धर्म परिवर्तन करने का दवाब बनाया था। बयान के सत्यापन के बाद ही केस दर्ज किए गए। - **हरिनारायणचारी मिश्र, पुलिस कमिश्नर, इन्दौर**

पीड़िता की शिकायत पर हमारी ओर से तत्परता से और त्वरित कारवाई की जाती है। यही वजह है कि इन केसों पर भी कारवाई हुई है। - **संतोष कुमार सिंह, आईजी, उज्जैन**

माँ रेवा के तट पर महेश्वर में सम्पन्न हुआ

नर्मदा साहित्य मंथन

माँ अहिल्या की राजधानी, आदि शंकराचार्य एवं मंडन मिश्र की शास्त्रार्थ भूमि, माँ रेवा के तट पर बसी ऐतिहासिक और धार्मिक नगरी महेश्वर में साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश एवं विश्व संवाद केंद्र मालवा ने संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम की निर्मल भावना साहित्य में आ रहें कलुष को दूर करना, सभी साहित्यकारो को एक मंच पर लाना, उन्हें भारत और विशेषकर मालवा -निमाड़ के वर्तमान आवश्यक विषयों के बारे में बताना व उस पर चर्चा करना। मालवा -निमाड़ के साहित्यकारों एवं समाज क्षेत्र में सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओ तथा पत्रकारिता के विद्यार्थियों को आमंत्रित किया। 4 ,5 व 6 मार्च 2022 को आयोजित इस कार्यक्रम में पत्रकारिता क्षेत्र की स्थापित दो प्रमुख संस्थाए पांचजन्य व रितम का सहयोग भी प्राप्त हुआ। 4 मार्च प्रातः 9 बजे मंत्रोच्चार के साथ नर्मदा साहित्य मंथन का शुभांरभ प्रज्ञा प्रवाह के संयोजक जे नंदकुमार जी साहित्य अकादमी के निदेशक डा. विकास दवे जी विश्व मालवा केन्द्र मालवा के अध्यक्ष दिनेश गुप्ता जी ने दीप प्रज्जवल कर किया। विभिन्न

विषयों पर देश के प्रबुद्ध लेखक, साहित्यकार, विचारक ने अपने विषयानुसार विचार प्रस्तुत किए जिनमें प्रमुखतः प्रशाल पोल जी, लक्ष्मण सिंह मरकाम, राजेश मेहरा, मोहन नारायण जी, डा. कविता भट्ट, संजय जी मेहता, आजाद जैन जी, मनोज शर्मा जी, पकंज सक्सेना, विजय मनोहर तिवारी, सुश्री इन्दुमंती काटदरे, हितेश शंकरजी, के.जी सुरेश, गिरिश जी प्रभुणे, डा. रामशंकर जी उपाध्याय, प्रखर जी श्रीवास्तव, नीरज जी अत्री, अनुज धर जी , विनज कुमार सिंह, मिथिला प्रसाद जी, डा. नीरजा गुप्ता, श्रीधर जी पराडकर आदि प्रमुख थे प्रशनों उत्तर व जिज्ञासा समाधान से पत्रकारिता विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन हुआ साथ ही नाट्यमंचन भारत भरती पर हुआ अंतिम दिवस साहित्य अकादमी के निदेशक डा. विकास दवे जी ने साहित्य मंथन से प्राप्त ज्ञान के अमृत की अनुभुति के साथ ही घोषणा के स्वर में कहा कि नर्मदा साहित्य मंथन प्रत्येक वर्ष माँ नर्मदा के पर्व बंसत पंचमी के अवसर पर आयोजित होगा ऐसा आशीर्वाद हमें माँ रेवा प्रदान करें।

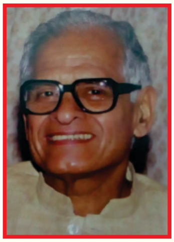

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री
रामभक्त राजनेता व साहित्यकार
जन्मदिवस : 2 मई

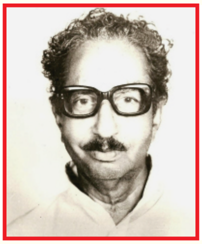

हरिभाऊ वाकणकर
भीमबेटका गुफा चित्रों के अन्वेषक
जन्मदिवस : 4 मई

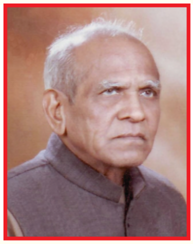

विष्णु कुमार जी
सेवा के धाम
जन्मदिवस : 5 मई

राधेश्याम जी
सेवाप्रिय
जन्मदिवस : 6 मई

डॉ. रामगोपाल गुप्ता
सेवा को समर्पित
जन्म दिवस : 10 मई

जितेन्द्रवीर गुप्ते
वानप्रस्थी सेना के नायक
जन्म दिवस : 11 मई

गोविन्दराव कात्रे
कर्मयोगी
पुण्यतिथि : 16 मई

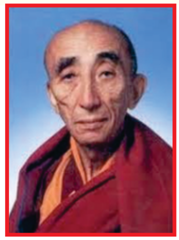

कुशक बकुला रिम्पोछे
आधुनिक लद्दाख के निर्माता
जन्म दिवस : 19 मई

गिरिराज प्रसाद जी
जीवन दीप जलाने वाले
पुण्यतिथि: 21 मई

विश्वनाथ जी
आतंकवाद में दृढ़ चट्टान
पुण्यतिथि : 24 मई

प्रताप सिंह बारहठ
अमर शहीद
बलिदान दिवस : 27 मई

रामनारायण त्रिपाठी
हिन्दी व हिन्दुत्व के पुजारी
जन्म दिवस : 31 मई

माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०२ गुड़ीपड़वा, चैत्र नवरात्रारंभ
ता. ०४ सौभाग्य सुंदरी, गणगौर तीज
ता. ०५ अं. विनायकी चतुर्थी व्रत
ता. १० श्रीराम नवमी, जवारे विसर्जन
ता. १३ जलियॉवाला बाग दिवस
ता. १९ अं. गणेश चतुर्थी व्रत
ता. २८ प्रदोष व्रत
ता. २९ शिव चतुर्दशी व्रत

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341